International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 04, April 2020
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आद्योगिकीकरण व नगरीयकरण की अवधारणा व स्वरूप और इनसे उत्पन्न चुनातियां

डॉ. राजू शर्मा (भूगोल विभाग)
प्राचार्य, प्रिंस कॉलेज सीकर, राजस्थान

लख सार – भारतीय परिदृश्य में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात औद्यागिकीकरण व नगरीयकरण की अवधारणा में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि दृष्टिगोचर होती है। औद्योगीकरण सामाजिक–आर्थिक विकास की वृहद प्रक्रिया है जिससे औद्योगिक पटल में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं। स्वतंत्रता के पश्चात उद्योगां मे निवेश के माध्यम से द्रुतगामी औद्योगिकीकरण ने देश की अर्थव्यवस्था का स्थायीकरण प्रदान किया। आद्यागिकीकरण आधुनिकीकरण का अंग है जा नगरीयकरण को बढ़ावा देता है। औद्योगिकीकरण व नगरीयकरण एक–दूसरे के पर्याय है औद्यागिकीकरण जहां नगरों के विकास में महत्वपूर्ण साधन है तो वहीं नगरों में औद्योगिकीकरण हतु पर्याप्त सुविधाएं मौजूद होतो है। औद्योगिकीकरण उद्योग+करण दो शब्दों के मेल से बना है जिसमं उद्योग से तात्पर्य कारखाने तथा करण से तात्पर्य स्थापित करना है। अतः औद्यागिकीकरण कारखाने स्थापित करने की प्रक्रिया है जिनमें मानव श्रम की अपक्षा मशीनी श्रम को अधिक महत्व व स्थान प्रदान किया जाता है। औद्योगिकीकरण की इस प्रक्रिया में मशीनीकृत उद्योगों को बहुलता प्रदान की जाती है जिसस कम समय में अधिक उत्पादकता प्राप्त की जा सके।

मूल शब्द – उद्याग, नगर, प्राकृतिक पर्यावरण, पारिस्थितिकरण, परिवहन मार्ग, प्रशासकीय प्रबन्धन, जन–जागरूकता।

परिचय :–

पाचीन काल से 19वीं शताब्दी तक के लगभग सभी नगर प्राकृतिक जलमार्गो के किनारे अवस्थित थे। जिससे दो नगरां के बीच व्यापार तथा परिवहन में सुविधा होतो थी। जलमार्गों के किनारे अवस्थित होने के कारण इन नगरों का अधिक विस्तार नहीं हो पाया। सरयू नदी के किनारे अयोध्या, गंगा नदी के किनारे वाराणसी, कानपुर आदि पाचीन काल में मोहनजोदड़ों सिन्धु नदी के किनारे, इसके अतिरिक्त अनेक नगर समुद्र तट क किनारे अवस्थित है। रेल परिवहन का नगरो के विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है जो नगर पहले से स्थापित थे उन्हें भी रेलमार्गा द्वारा जोड़ा जा रहा है। रेलमार्गों द्वारा इटारसी, टुंडला, मुगलसराय आदि नगरों का विकास हुआ। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सडक़ परिवहन का विस्तार प्रारम्भ हुआ, धीरे–धीरे यह बड़े नगरां को छोटे नगरों तथा बाजार को आपस में जाड़ने में सहायक हुई बड़े नगरों मं अधिक जनसंख्या हाने के कारण नगर के चारो ओर सड़कों के किनारे नई बस्तियों की स्थापना होने लगी। वायु परिवहन का प्रभाव नगर के विस्तार को पभावित करता है इसका विस्तार हवाई अड्डा के चारों ओर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उद्याग तथा खनिज पदार्थो की उपलब्धता नगरों के स्थापन का प्रमुख कारक है। औद्योगिक नगर को कच्चे माल की उपलब्धता के क्षेत्र से परिवहन मार्गो द्वारा जोड़कर नगरो का विकास किया गया है। औद्योगिक नगरों के लिए कच्चे माल तथा परिवहन सुविधा का होना अति आवश्यक है। भारत में कोयला क्षेत्रों के निकट स्थापित उद्योगों में दुर्गापुर, बोकारो तथा कोयला क्षेत्र एवं लौह क्षेत्र के आपस में जुड़ जाने से लौह–इस्पात नगरों का विकास हुआ जमशेदपुर, भिलाई, राउरकेला, सलेम आदि प्रमुख औद्योगिक नगर है। नगरों के विकास म धार्मिक प्रभाव प्राचीन काल से हआ है ये नगर धार्मिक

स्थल के चारो आर बस्तियां का जमाव हो जाने से स्थापित हाते हैं बाद मे इन बस्तियों को परिवहन मार्गां द्वारा जोड दिया जाता है। वाराणसी, मथुरा, जैसे नगरों के विकास के केन्द्र में धार्मिक महत्व प्रमुख रहा है जिससे इस महानगरों का अधिक विकास हुआ है।

वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ नगरीकरण भी बढ़ता जा रहा है। 20वीं सदी में नगरीय क्रान्ति व 1950 के बाद जनसंख्या विस्फोट का काल रहा है तथा औद्योगिक क्रान्ति क पश्चात् से ही न केवल औद्यौगिके नगरों का विकास हुआ है बल्कि नगरीकरण क साथ–साथ यातायात व इलेक्ट्रोनिक्स की वस्तु का भी प्रचलन बढ़ा ह जिनके अत्यधिक उपयोग के कारण इनके लिए ऊर्जा का कार्य करने वाले खनिज जैसे कायला, खनिज, तेल आदि के ई ंधन के रूप में इस्तमाल करने पर वायुमण्डल में अनेक प्रकार की विषैली गसे का प्रसार हुआ है। प्रमुख रूप से ये विषैली गैस जैसे – सल्फर डाई ऑक्साइड, नाइट्राजे न ऑक्साइड, कार्बनडाइ ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, अमोनिया, सीसा अल्ट्रेहाक्ड, एसबस्टान, एयरोसॉल आदि वायु में घुल कर वायु प्रदषण का बढ़ा रही है। इस प्रकार नगरीय अधिवास व औद्यागिक क्षेत्र से निकलने वाले कूड़ा–कचरा व उद्यागों से निकलने वाले जल में घुले निलम्बित गैस पदार्थ, क्लोरीन, आयन, रासायनिक अपशिष्ट सीसा, पारा केडमियम व कृषि क्षेत्रो में उपयागे लिये जाने से कीटनाशक व उर्वरकों के रसायन के जल में मिलकर उसे प्रदूषित कर रहे है।

नगरीकरण के राष्ट्रीय आयोग के अनुमान के अनसार प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति 9500 ccm जल की आपूर्ति की जाते है। सन् 2001 ई. की अनमानित नगरीय जनसंख्या हेतु इस दर से 16,000 ccm जल की आवश्यकता होगी। इतनी मात्रा में जलापूर्ति प्राप्त करने हेतु नये जलाशयों का निर्माण करना होगा। जिसमं बड़े वन या कृषिगत क्षेत्र जलमग्न होंगे। इस कारण वनों एव कृषि हेतु जल की कमी होने पर जल की आपूर्ति नालों द्वारा करनी होगी जो लगभग 80 प्रतिशत प्रदूषित होकर निकलता है। इसी प्रकार एक अनुमान के अनुसार 2001 में 12,800 ccm प्रदूषित जल शहरों से निकलता है। विकासशील देशां की अरबों जनसंख्या ग्रामीण व शहरी किसी न किसी प्रकार की पर्यावरणीय समस्याओं से ग्रस्त है। आज बिना पर्यावरण को प्रभावित किये कोई भी औद्यागिक उत्पन्न सम्भव नहीं है। औद्यागिक इकाईयां व यातायात के साधन ईश्वर द्वारा प्रदान स्वच्छ वायु का दूषित कर रहे है। वर्तमान समय में विभिन्न पदूषण के साधनों द्वारा लगभग 50,000 अलग–अलग रासायनिक तत्वों का निरन्तर उत्पादन कर रहा है जिनमें बहुत से ऐसे रासायन है जो हृदयघात, कैंसर आदि बिमारी का कारण बनते हैं।

वर्तमान समय में औद्यागिकीकरण व नगरीयकरण से सम्बन्धित अवधारणा चर्चा का प्रमुख विषय है। प्रद्षण प्रकृति प्रदत्त कोई वस्तु नहीं है। अपितु मानव ही इसकी उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी है। पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकी असन्तलन की समस्या किसी सम ुदाय, संगठन या सरकार की नही अपितु हम सभी की ह। स्वस्थ पर्यावरण रूपी विरासत को हम सभी मिलकर ही समाप्त हाने से बचा सकते है। भौतिक प्रगति और पारिस्थितिक असन्तुलन आधुनिक आद्यागिक युग की दन ह। प्राकृतिक सम्पदा के अविवकेपूर्ण उपयागे ने विश्व पर्यावरण को जर्जर बना दिया ह। बढ़ते औद्योगिक क्षेत्रां का विस्तार, शहरीकरण का विस्तार, कृषि के लिए भूमि का विस्तार व पर्यटन उद्योग में वृद्धि के कारण वनों के विनास में वृद्धि हो रही है क्योंकि वर्तमान समय में मानव पृथ्वी के प्रत्येक जगह पर पहुच गया है और अपनी गतिविधियां का विस्तार कर रहा है। जिसके कारण वनों का तीव्र गति से दोहन कर रहा है। जिसके परिणामस्वरूप न केवल वायु गुणवत्ता में कमी आ रही ह बल्कि मृदा का अपरदन भी हो रहा ह जिसके कारण विश्व के लगभग पत्येक देश में भूमि के अवनयन होने के कारण मृदा की गुणवत्ता तीव्र गति से ह्रास हुआ है बल्कि हो रहा है। इस प्रकार वनों के दोहन के कारण वर्षा जल के भूमि में अन्ततः स्पदन में कमी के कारण भूमिगत जल मं कमी, धरातलीय वाहित

जल में बढ़ातरी, मृदा की ऊपरी परत का हटना, कृषि उत्पादनों में भारी कमी, बाढ़ के घनत्व व परिणामों म उच्च वृद्धि, पारिस्थितिकी तन्त्र व जैव विविधता में भारी ह्रास तथा जलवायु व मौसमी दशाओं मे परिवर्तन आदि प्रभाव पड़ रहा है। इनके सम्मिलित प्रभाव के कारण प्राकृतिक पर्यावरा एवं पारिस्थितिकी तन्त्र मं भारी पैमाने पर ह्रास हो रहा है।

नगर मुख्यतः उद्योग, परिवहन, वाणिज्य, शिक्षा, प्रशासन, चिकित्सा, संचार तथा मनोरजन आदि के केन्द्र होते हैं जो उत्पादन एवं वितरण के घनत्व क्षत्रे होते हैं जो उसको समाजिक व आर्थिक परिस्थितियों का परिणाम होता है। नगर के विकास में भौगोलिक दशाओं के साथ अनेक कारकों तथा शक्तियां का प्रभाव रहता है जिसे प्रमुख रूप से भौतिक कारक तथा मानवीय कारक दो भागों मं वर्गीकृत किया जा सकता है। नगर की उत्पत्ति एवं विकास में भौतिक कारकों का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। भौतिक कारकों में प्रमुख रूप से अवस्थिति, जलवायु, जल आपूर्ति आदि अनेक कारक सम्मिलित किय जाते हैं। नगर की उत्पत्ति एवं विकास में प्रत्येक नगर की अवस्थिति के पीछे एक बड़ा कारक होता है नदियों क किनारे, परिवहन सुविधा की उपलब्धता, कच्चे माल की उपलब्धता, अनुकूल जलवायु आदि प्रमुख है। सामान्यतः समशीतोष्ण तथा उपोष्ण जलवायु नगरों के विकास के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।

मानवीय कारकां में यातायात के साधन, उद्योग, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि अन्य कारक प्रमुख हैं। परिवहन साधनों में सड़क परिवहन, जल परिवहन, रेल परिवहन तथा वर्तमान समय में वायु परिवहन भी नगरां के विकास का पमुख कारण बन गया है। नगरों के विकास पर राजनीतिक कारकों का प्रभाव प्राचीन काल से ही राजधानियों के रूप मे तथा वर्तमान प्रशासनिक केन्दां के रूप में स्पष्ट रूप से रहा ह। इसके अतिरिक्त छावनी नगर सुरक्षा की दृष्टि से स्थापित किय जाते हैं।रूड़की, अम्बाला, पठानकोट जैसे नगरां का विस्तार छावनी नगर होने के कारण अधिक हुआ। इसके अतिरिक्त नगरों के विकास में भौगोलिक स्थलाकृतियों का भी प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता ह। पहाड़ी क्षेत्रों मं नगरों का विकास कम होता है जबकि मैदानी क्षेत्र में नगरा का विकास अधिक होता है। नगर का बसाव स्थान उसकी प्राथमिक उत्पत्ति के स्थान का सूचक है। प्रारम्भ में नगर एक छाटे से स्थल पर बसता है बाद में समय के साथ–साथ अपने आकार में वृद्धि कर लेता है (ए.ई. स्मल्स)। नगर मार्गां से जुड़े होते हैं नगरीकरण की प्रवृत्ति और वास्तव में नगर उन्ही स्थानों पर बसते हैं जो किसी मार्ग पर होते हैं विशेषतः जहां किसी प्राकृतिक बाधा ने मार्गो को अवरूद्ध किया हो अथवा यातायात क साधनों का परिवर्तन आवश्यक हा। आर्थर ई. स्मल्स के अनुसार नगरों और कस्बां की स्थापना को बसाव स्थिति सदैव प्रभावित करती है क्योंकि स्थितियां न केवल भौतिक परिस्थितियों को ही व्यक्त करती है जिनका प्रभाव यातायात को केन्द्रित करने में होता है वरन् ये राजनीतिक भूगाल को भी व्यक्त करती है। ये उस क्षेत्र की सीमा को भी प्रभावित करती है जिनका सम्बन्ध नगरों के कार्यों से होता है। जगदीश सिंह के अनुसार भूमि उपयोग का व्यवस्थित प्रारूप केवल उन कार्या के प्रभाव का परिणाम ही नहीं होता है जो उस बसाव–स्थान का अधिक मूल्य दे सकते हैं, बल्कि उन कार्यों का भी प्रभाव होता है जो गम्यता के सन्दर्भ में अधिक लाभदायक स्थिति रखते हैं।

नगरीकरण के पभाव :–

किसी नगर को बनाने मे अनेक अन्तनिहित क्रियाओ तथा शक्तिया का योगदान है। इनके भौगोलिक स्वरूप तथा प्राकृतिक संसाधन पर मानव का कोई भी नियंत्रण नहीं होता है यही शक्तियां नगर की स्थिति तथा विकास को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, परिवहन व्यवस्था, आदि का भी नगरीकरण पर प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता ह। नगर अपने केन्द्रीय गतिविधियां द्वारा अपने आस–पास के क्षेत्रों को सेवा प्रदान करते है। बड़े नगरों में इन गतिविधियों

की संख्या एवं सघनता अधिक तथा छोटे नगरों में कम होतो है। नगर का किसी स्थान पर बने रहना नगर के उन गतिविधियां तथा सेवाओं पर निर्भर करता है जिनके द्वारा वह अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करता है (डिकिन्सन, 1966)। नगर कभी भी अलग–अलग रूप से नहीं रह सकता, वह अपने समीपवर्ती चारों ओर स घिरे प्रदेश पर भाजे न, दूध, सब्जी, फल आदि के लिए निर्भर करता है (आर.एल सिंह, 1973)।

भारत की जनसंख्या में तीव्र गति से वद्धि हो रही है जबकि नगरीय जनसंख्या में भारत के कुल जनसंख्या वृद्धि से भी अधिक गति से वृद्धि हो रही है वही ग्रामीण क्षेत्रां में वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम है। नगरीकरण वह चक्रीय प्रक्रिया है जिसमें कोई राष्ट्र कृषि–सामाजिक व्यवस्था से ओद्यागिक–सामाजिक व्यवस्था की ओर बढ़ता है (टिवार्था)। एक तरफ जहां नगरीकरण से देश की सामाजिक–आर्थिक पगति में वृद्धि होती है वही दूसरी तरफ तीव्र नगरीकरण से अनेक प्रकार की समस्याएं भी उत्पन्न हाती हैं। नगरीय अर्थव्यवस्था के गतिविधियां जैसे– विनिर्माण उद्योग, निर्माण कार्य, व्यापार तथा सेवा आदि गतिविधियां क लिए कम स्थान की आवश्यकता होतो है इस कारण कम स्थानों में अधिक लोगो को रोजगार मिलता है और कम स्थान में निवास करने वाले लोगां की संख्या अधिक रहती है। यहां शिक्षा, रोजगार, व्यापार आदि गतिविधियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरो की ओर जनसंख्या का प्रवाह भी अधिक होता है जिस कारण नगरीय घनत्व अधिक हो जाता ह। नगरीय विकास तथा अधिक जनसंख्या के कारण नगरां में अनेक प्रकार को समस्याएं भी उत्पन्न हो जाती है जिसका बहुआयामी प्रभाव लोगो के जीवन पर पड़ता है। जिस नगर का आकार जितना अधिक होता है वहां जल आपूर्ति, यातायात, नगर की सफाई, जैसी अनेक समस्याएं उतनी ही अधिक मात्रा मं पायी जाती है। नगरीकरण के द्वारा लोगों के सामाजिक मूल्यां में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देता ह। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां सामूहिकता की भावना पायी जाती है वहीं नगरीय क्षेत्र में व्यक्तिवादी भावना अधिक पायी जाती है। नगरीकरण से लोगों में शिक्षा का विस्तार तथा वैज्ञानिक एवं तर्क प्रधान सोच के विकास सेअंधविश्वास आदि कम होने लगा है तथा महिलाओ की स्थिति नगरीय क्षेत्रों में अधिक शसक्त है जो आथिक रूप से अच्छी होने लगी है। नगरीय विस्तार से समाज के संयुक्त परिवार अब एकल परिवार में परिवर्तित हाने लगे हैं। जिस कारण व्यक्तिवादी सोच को बढ़ावा मिल रहा है।

स्वतंत्रता के बाद से नगरीकरण में तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिस कारण नगरों में अनक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। नगरों के आकार तथा घनत्व में वृद्धि होना नगरों की पमुख समस्या है। भारत के प्रत्येक नगर की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हाने के कारण आवास के लिए मकानो में कमी एवं गन्दी बस्तियां की उत्पत्ति जैसी समस्याओं से लोगों को अस्वास्थ्यकर मकानो में रहने से अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या उत्पन्न हो जाती है। बी. एम. सिन्हा ने अपने एक लेख में बताया कि वर्तमान नगर रहने के स्थान पर रोजगार केन्द्र बन गए हैं। इस पवृत्ति ने गन्दो बस्तियों को प्रोत्साहन दिया है वह बस्तियां भौतिक दृष्टि से नगर को अमानवीय बना देती है। सम्मानजनक जीवन–यापन सुविधा के अभाव मं जनसंख्या का बढ़ता हुआ सकेन्द्रण सामाजिक व नैतिक स्तर पर भी अमानवीय परिस्थितियां को जन्म देता है। जनसंख्या के अधिक हाने से पीने क पानी की समस्या, परिवहन साधनो का अभाव, बिजली की कमी आदि समस्याएं पैदा हो जाती है। जिस कारण अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न हो रही है। नगर में खाद्य पदार्थो तथा दैनिक उपभोग की सामग्री के अधिक मागं के कारण इनका मूल्य अधिक रहता है। मकानों का किराया अधिक होने से निम्न तथा मध्यम वर्गीय परिवार के लोग अच्छे मकानों के किरायां का निर्वहन न कर पाने से अस्वास्थ्यकर मकानों मं रहने को विवश होते हैं। अधिक जनसंख्या के कारण नगर में प्रशासकीय प्रबन्धन का अभाव पाया जाता है जिस कारण नगर को साफ–सफाई, पीने का पानी, सडके, बिजली, सीवर,

शिक्षा आदि समस्याओं मं अव्यवस्था पायी जाती है। नगर में बढ़ते कचरे की समस्या इनके निस्तारण के लिए उचित प्रबन्ध का न हाना तथा नगर में बढ़ते वाहन एवं उद्यागे आदि के द्वारा हाने वाली प्रदूषण नगरीकरण की प्रवृत्ति की समस्याएं पमुख हैं जो दिन–प्रतिदिन बढती जा रही है। जो नगर जितना अधिक बड़ा है वहां प्रदूषण की समस्या भी उतनी ही अधिक है ऐसा उचित प्रबन्धन एवं जन–जागरूकता न होने के कारण होता है।

नगरीय केन्द्र प्राचीन काल से ही सृजनात्मक तथा उद्यम निर्माण एवं लोगों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आधुनिक समाज में नगरीकरण, औद्योगीकरण आदि को क्षेत्र तथा प्रदेश के सामाजिक आथिक विकास का सूचक माना जाता है। यद्यपि नगरीकरण जनसंख्या की तीव्रतर तुलनात्मक वृद्धि की एक प्रक्रिया है लेकिन इसका उपयोग इस अनुपात के लिए भी किया जा सकता है जा किसी प्रदेश की नगरीय बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या या नगरीय जनसंख्या उस प्रदश की कुल जनसंख्या में किसी निश्चित समय पर बनाती ह (ए0के0 सिंन्हा)। लैम्पर्ड के अनुसार नगरीकरण की ढाँचागत संकल्पना का अर्थ कृषि समाज के औद्योगिक समाज मे परिवर्तन की प्रक्रिया से है।

औद्यागिकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरुप अर्थव्यवस्था उत्पादन की औद्यागिक विधियों में परिवर्तित हो जाती ह। विभिन्न औद्योगिक गतिविधियां जैसे विनिर्माण, विद्युत, गैस और जल प्रदाय, खनन और खदान आदि औद्योगिकीकरण के प्रमुख घटक है। औद्यागिकीकरण के माध्यम से उत्पादन को तकनीक में परिवर्तन होता है जा कि उत्पादन प्रणालियां को पूर्णतया प्रभावित करती है।

औद्योगिकीकरण ने आर्थिक स्थिति को अधिक प्रभावित किया है। औद्योगिकीकरण क कारण ही समाज मुद्रा अर्थव्यवस्था से परिचित हो पाया है। इससे पूर्व वस्त विनिमय के आधार पर व्यापार आर उद्योग आधारित था। औद्योगिकीकरण से व्यक्ति नवीन अथव्यवस्था से जुड़ गए तथा उनके खान–पान, रहन–सहन आर जीवन स्तर मेंव्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर हाने लगा। ग्रामीण समुदाय का शहरों की ओर पलायन भी औद्योगिकीकरण से उत्पन्न आधुनिकता ही ह।

निष्कर्ष –

औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप समाज में प्रचलित विश्वासों तथा मूल्यों में परिवर्तन दृष्टगोचर होता है इससे व्यक्तिवादी दर्शन को अभिव्यक्ति अधिक दृष्टिगोचर होतो है। औद्योगिकीकरण न केवल सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है अपितु समाज की समस्त व्यवस्थाओं को भी परिवर्तित करता है। व्यापक शिक्षा व्यवस्था, गतिशील स्तरीय व्यवस्था, ग्रामीण जनसंख्या का नगरो की ओर प्रवास, भौतिकवादी मूल्य व्यवस्था, विशाल स्तर पर उत्पादन, बाजार तथा उपभोगतावाद की स्थिति आदि औद्यागिकीकरण की ही देन है अर्थात नगरीयकरण तथा आर्थिक विकास की समस्त प्रक्रियाएं जो आधुनिक समाज का प्रभावित करते हए उन्हें नवीन स्वरूप प्रदान करती है औद्यागिकीकरण की ही देन है। यह सामाजिक परिवर्तन की एक मौलिक प्रक्रिया है जिससे मनुष्य के जीवन का प्रत्यके स्तर प्रभावित होता है। औद्योगिकीकरण वर्तमान समाज में सामाजिक प्रगति का पर्याय बन चुका है। औद्यागिकीकरण के फलस्वरूप भारतीय सामाजिक संरचना, उसकी मूल मान्यताएं, सामुदायिक जीवन, परिवार, जाति, सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन आदि में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे ह। औद्योगिकीकरण का प्रभाव नगरीयकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के रूप म दृष्टिगत हो रहा है जिन क्षेत्रों में नवीन मशीनीकृत बड़े उद्योग स्थापित हो रहे है वे स्थान बड़े–बड़े विशाल अत्याधुनिक नगरों में परिवर्तित हाते जा रहे है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य –

- गुप्ता एन.एल. : 'हरियाणा में कृषि विकास' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपरु 1985.
- कॉपरेटिव मूवमेंट इन : 'स्टेटिस्टीकल सैक्सन, कॉपरेटिव डिपार्टमेन्ट, हरियाणा 1976–77, 1982–83
- स्टेटिस्टीकल एब्सटैक्ट : आथिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान,जयपुर
- प्रगति विवरण : हरियाणा राज्य भण्डार व्यवस्था निगम, 1986
- आर.के.गुर्जर : 'इरीगे"ान फार एग्रीकल्चर माइनाइजेशन' साइन्सीटिफिक पब्लिसर्स, 1987
- टी.एस.चौहान : 'कृषि भूगाले' एकेडमिक पब्लिसर्स, गुरूग्राम, 1987
- सिंह, जसवीर : 'एन. एग्रीकल्चर ज्योग्राफी ऑफ हरियाणा' विशाल पब्लिकेशन –दिल्ली, 1975
- मौधे, बसंत जैन एवं शान्ति विजय : 'राजस्थान में कृषि उत्पादन' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- सिंह, भ्रज भूषण (1979) : 'कृषि भूगाल ' तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी
- शर्मा, बी.एल. (1977) : 'कृषि भूगाल ' साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
- जाट, गुर्जर : 'मानव भूगोल' पचंशील प्रकाशन, जयपुर
- जाट,बी.सी. (2004) : भू–आकृति विज्ञान, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
- सूरजमान (1982) : मृदा और जल संरक्षण, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
- सूरजमान (1995) : फसलां में जल प्रबन्ध, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
- भाटिया, एस.एस. : 'पैटर्नस ऑफ क्राप कन्सट्रे"ान एण्ड डाइवर्सीफिकेशन इन इंडिया' इकानामिक ज्योग्राफी, वोल्यूम 41 न.–1–1995
- प्रो. एच. एस. शर्मा, डॉ. एम. एल. शर्मा, डॉ. जे.के. शर्मा – भारत का नूतन भूगाले
- एस. डी. कौशिक, अलका गौतम – संसाधन भूगाल